पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर

में आयोजित

एक दिवसीय वेबीनार

विषय – जल–संरक्षण

दिनाँक – 21 अक्टूबर 2021

कार्यक्रम विस्तृत प्रतिवेदन

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर द्वारा 01 दिवसीय वेबीनार का आयोजन दिनाँक 21/10/2021 को किया गया। एक दिवसीय वेवीनार में उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त 3 तकनीकी सत्र संचालित किए गए। वेबीनार में स्थानीय प्रतिभागियों के साथ अन्य राज्यों के महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षकगण, शिक्षाविद इत्यादि शामिल रहे।

वेबीनार में विषय विषेषज्ञ के रूप में डॉ. डी.पी. कुइटी सेवानिवृत प्राध्यापक, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर, डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव अधिष्ठाता छात्र कल्याण हेमचंद दुर्ग वि.वि. दुर्ग एवं श्री के.पाणीग्रही जल संरक्षण विशेषज्ञ रायपुर शामिल रहे। वेबीनार में प्रो. बंश गोपाल सिंह माननीय कुलपति पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ, बिलासपुर, डॉ. इन्दु अनन्त कुलसचिव एवं विषय विशेषज्ञों के माध्यम से निम्नांकित सुझाव प्राप्त हुए –

- जल सरंक्षण में सामान्य जन की जागरूकता बहुत ही आवश्यक हैं, जिससे हम सभी अपने दिनचर्या में जल के कम उपयोग वाली पद्धति को अपना कर जल को संरक्षित कर सकें।
- जन जागरूकता व भागीदारी हेतु स्कूलों, कालेजों एवं विश्वविद्यालय स्तर पर निबन्ध, रंगोली, चित्रकला व पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती हैं।
- छत्तीसगढ़ में तालाबों का उपयोग बहुत पहले से ही प्रचलन में है, किन्तु समयोपरांत इनकी प्रासंगिकता कम होती गयी जिसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, तालाबों की साफ सफाई ,नव निर्माण एवं उनमें जल आगमन एवं निकास के स्त्रोतों को ठीक करने की जरूरत है तालाबों व जलाशयों के निर्माण से भू–अन्तर्गत जल स्तर को भी बढ़ाया जा सकता है।

- सार्वजनिक जगहों जैसे पार्कों, अस्पतालों, विद्यालयों, मंदिरों आदि में नल की टोटियां अधिकांशतः खराब ही पाई जाती है। जिसके कारण कई हजार लीटर पानी बरबाद हो जाता हैं। इन नल की टोटियों को ठीक कर जल को बचाया जा सकता है।
- जल के औघोगिक उपयोग हेतु पर्यावरण के अनुसार जल का समुचित एवं बार बार उपयोग करने के लिए औघोगिक इकाईयों को सरकारी आदेश के तहत कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- पानी संरक्षण के लिए रेनवॉटर हार्वेस्टिंग तकनीक का इस्तेमाल करना चाहियें जिससे वर्षा का जल संरक्षित किया जा सकें।
- पेड़ों की कटाई से धरती की नमी में लगातार कमी आ रही है। जिससे भू–जल स्तर पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अतः वृक्षारोपण को अधिक से अधिक बढ़ावा दिया जाय। संभव हो तो अपने जन्मदिवस पर प्रत्येक व्यक्ति एक पौधा अवश्य लगाये जिसका संरक्षण किया जा सके।
- सब्जियों व फलो को धोते समय बचे पानी का उपयोग घर के सफाई आदि के लिए करना चाहिए या उस पानी को क्यारियों में डालना चाहिए।
- एयरकंडिशनर का पानी कंडेन्स होकर बाहर निकलता है उसे एकत्रित कर वाहन धोने में या घरेलु कार्यो में उपयोग कर सकते है।
- वॉटर–प्यूरीफाई के समय बहुत पानी वेस्ट होता है, उस पानी को पाइप लगाकर वाशिग मशीन में कनेक्ट कर सकते है।
- सिचाई हेतु किसानों को ड्रिप सिंचाई पद्धति का प्रशिक्षण देने से खेत पर ही वर्षा के जल को रोकने एवं भूमि में ले जाने हेतु प्रोत्साहित करें। इसके साथ हीं फव्वारा विधि का उपयोग करने से पानी के दुरूपयोग को बचाया जा सकता है।
- वेवीनार में यह विचार भी सामने आया कि छत्तीसगढ के नदी व नालों पर वर्षा के जल को रोकने का एवं भूजल स्तर के रिचार्ज हेतु बांध व सैंड बैक डेम बनाने के लिए जन जागरण कर कार्य को संपादित किया जाय।
- ग्लोबल वार्मिंग को रोकने हेतु प्राकृतिक संसाधनो को व प्राकृतिक जंगलों को संरक्षित करने की आवश्यकता हैं।
- प्रदुषित जल को शोधन कर पुनः उपयोग किया जाय।
- कृषि में जल का 60 से 70 प्रतिशत उपयोग होता है साथ ही सिंचाई की विधि के अनुचित प्रयोग से भी जल क्षरण होता है ,इस दिशा में किसानों को

प्रशिक्षित करनें एवं समझाने पर बल दिया जाना चाहिए ,ताकि वे ड्रिप सिंचाई का प्रयोग ज्यादा करें ,खेत पर ही वर्षा जल को रोकने एवं भूमि में ले जाने हेतु गड्ढा बनाने को प्रोत्साहन करना चाहिए,ताकि विषम परिस्थितियों में इस जल का उपयोग सिंचाई में भी कर सके ,आज के समय में कम पानी वाली फसलें अधिक आमदनी दे रही है अतः कृषि में विविधिकरण को बढ़ावा देना होगा।